AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

राजशेखर प्रणीत ''बालरामायण में अमात्य'' विमर्श

ORIGINAL ARTICLE

Author

खुशवन्त माली,

शोधार्थी, संस्कृत विभाग,

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,

जोधपुर, राजस्थान, भारत

शोध सार

संस्कृत नाट्य साहित्य समग्र संस्कृत साहित्य में अद्वितीय है। दृश्य काव्य में गनित होने से इसका महत्व बढ़ जाता है। आचार्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र नियमों से बद्ध महाकवि राजशेखर प्रणीत 'बालरामायण' नाटक इसी श्रृंखला में महनीय हैं। मुख्य रूप से इस रूपक में सुमन्त्र व माल्यवान प्रधान अमात्यों के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं, जिसमें सुमन्त्र महाराज दशरथ का तथा माल्यवान प्रतिनायक रावण का प्रधान अमात्य हैं। दोनों नीतिनिपुण,शास्त्र सम्पन्न, कुशल योद्धा, स्वामी हितैषी, पथ–प्रदर्शक, प्रतिक्षण स्वामी कुशल चिंतन आदि अनेकानेक महनीय, विशिष्ट तथा यथार्थ निरूपण हुआ हैं। शोध्य विषय से सुमन्त्र के श्रेष्ठ चारित्रिक व व्यक्तिक गुणों का प्रचार–प्रसार हो सकेगा, साथ ही साथ माल्यवान की स्वामी भक्ति, विषम परिस्थिति में स्वामी का साथ देने के गुणों से आज के मंत्री प्रेरणा ले सकेंगे। सूक्ष्म चिंतन व स्वार्थ के चलते हम देखते है लोक में सरकारें गिर जाती हैं जो लोकत्रंत के लिए घातक है। वर्तमान के मंत्री प्रजा एवं राष्ट्र हित से स्वहित को सर्वोपरी मानते हैं, जो नितांत अनुचित हैं। शोधपत्र इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगा। आज के मंत्री सुमन्त्र की निष्ठा और स्वामी भक्ति से प्रेरणा लेकर प्रजा का हित चिंतन कर सकेंगे। प्रजाहितों हेतु अग्रसर हो सकेंगे। राष्ट्र के कल्याण के लिए परस्पर मैत्री, सद्भाव, सहयोग व समर्पण की महती आवश्यकता होती हैं। अतः वे इस दिशा में सकारात्मक दृष्टि से आगे बढ़ सकेंगे व राष्ट्र उन्नति हेतु सर्वस्व अर्पण को सज्ज हो सकेंगे। उनमें श्रेष्ठ व उच्च चारित्रिक तथा व्यक्तिक गुणों का उपस्थापन हो सकेगा।

मुख्य शब्द

अमात्य, राष्ट्र, चरित्र, लोकतंत्र।

'संस्कृत नाट्य साहित्य' समग्र साहित्य में अद्वितीय हैं। अपनी दृश्य–श्रव्य समन्वित आभा से सहृदआह्लादकारी रसज्ञ पाठकवृंद को अनायास ही स्व की ओर आकर्षित करता हैं। संस्कृत रूपकों के विविध विषय वर्णन रहे हैं जिनमें 'अमात्य' सर्वथा प्राचीन व राजा के उत्कर्ष के हेतु के रूप में हमारे सामने प्रकट होता है। अमात्य ही वह सृष्टा है जिसके मस्तिष्क में राजा (स्वामी) व राज्य का प्रलय व अन्त पलता है। यहाँ विवेच्य है राजशेखर प्रणीत बालरामायण में वर्णित अमात्य विमर्शः

संस्कृत साहित्य के प्रभाभास्कर नक्षत्र एवं यायावरवंशीय महाकवि राजशेखर विरचित बालरामायण में अमात्य गुणधर्म सन्निकर्षता के साथ पृथक माल्यवान व सुमन्त्र रूप में निदर्शन हुआ है; जो अत्यन्त प्रज्ञावान परिदृश्य से श्लिष्ट है। राज्य संचालन और प्रजापालन की महती शिक्षा राक्षस के कथन के द्वारा उद्भाषित की गयी है जो एक

कुशल और प्रजा प्रिय राजा हेतु अत्यन्त आवश्यक, अनुकरणीय, विचारणीय तथा ग्राह्य है। दृष्टांत ग्रहण करने के क्रम में यथाः

मृदुता और पुरूषार्थ से राज्य का संचालन करने वाले राजा का परराष्ट्र सम्बद्ध कर्म सींचे गये वृक्ष की भाँति फल देता है। छलपूर्ण प्रशासन राजकीय गुप्तचरों से विहीन राजाओं द्वारा सर्वथा दुष्कर है, सुरासाध्य लक्ष्मी अवसावधान चित्त वाले को अवश्य विचलित कर देती है। राक्षस का यह कथन अवश्य ग्राह्य है कि जिसके कार्यों की सिद्धि अमात्यों के अधीन नही, ऐसे मन्त्रित्व को धिक्कार है क्योंकि राजा द्वारा कही भी जो कुछ भी कार्य सम्पन्न [2] स्वामी को सदैव स्वयं तथा राज्य से सम्बंद्ध अनर्थो पर सज्ज रहना चाहिए। मंत्रियों, नीतिज्ञों व अमात्यों से यथाअवसर अनर्थ विषयक विचार विमर्श करना चाहिए। राक्षस का यह कथन उसका यर्थाथ प्रतिपादन करता हैं। यथाः

राक्षस का नीतिज्ञ कथन सम्भाव्य अनर्थो में हो रहे अनर्थ का प्रथम प्रतिकार करना चाहिए।[3]

1. **माल्यवानः** नीति में मंत्रीगण दूसरे के दुःख में दुःखी तथा दूसरे के सुख में सुखी होते है।[4] स्वामी की दुर्नीतियों के विषय में सदैव चिन्तनशील, कमलवन की सूर्य किरणों के अतिरिक्त व्याधि शून्य, नीतिज्ञ, विप्लव में कर्णधार[5], मतिमान्[6], राजन हितैषी[7], बुढी बुद्धि वाला[8] स्वामी मनोरथ पूर्तिकर्त्ता[9] समय लाभ प्रयोगों में निपुण व कार्यसिद्धि में दक्ष[10] अभीष्ट सिद्धि कर्त्ता, मंत्री मण्डप आसन धर्ता[11] अभस्त लक्ष्य युक्त चक्षु संलग्न[12] स्वामी मनोंरथ सिद्धि हेतु नीति निर्माता[13] माया सम्पन्न[14] माया द्वारा मनोरथ सिद्धिकर्त्ता[15] दुष्कर स्वामी भक्त और चतुर असाध्य[16] क्रूर व आँसुओं में रसज्ञ[17] के साथ–साथ छल द्वारा राम का वन में निर्वासन यन्त्र–जानकी का निर्माण आदि माल्यवान की बुद्धि चातुर्य को प्रदर्शित करता है। माल्यवान का चरित्र प्रबुद्ध राजनीतिज्ञ के रूप में दिखया है, जो भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल की घटनाओं पर अपनी सूक्ष्म दृष्टि रखते हैं।
2. **सुमन्त्रः** दशरथ पथप्रदर्शक[18] दशरथ पुत्र मित्र[19] सुदीर्घ तीर्थ यात्रा करने वाले[20] दुर्गम वन के पथिक[21] दशरथ पुत्र शुभचिन्तक/कुशन चिन्तक[22] दशरथ पुत्र कुशलता समाचार प्रदाता[23] सीता विषयक कुशल समाचार प्रदाता[24] राम–लक्ष्मण व सीता का गंगा पार वृतांत सुनाने वाले[25] यमुना पार वृतांत वक्ता[26] चित्रकूट पर्वत व बीहड़ पार वृतांत वक्ता[27] दशरथ पुत्रों के वस्त्रों, भोजन व आवास विषयक वक्ता[28] वनवासिनी सीता गृहणीत्व दृष्टा व वक्ता[29] राजपुत्री सीता के प्रकृत्या दरिद्र स्त्रीधर्म विषयक दृष्टा[30] मार्ग की दुःख जनक यात्राओं में सीता के राम विषयक प्रेम व सेवा के दृष्टा31 विराध के विनाश धराधार को काण बनाना एवं आश्रमों के सुखद निवास दृष्टा[32] लक्ष्मण व सीता की प्रभु श्री राम की सेवा प्रत्यक्ष दृष्टा[33] लक्ष्मण–जानकी की गुरू शुश्रुषा विषयक वक्ता[34] हरिण, मिथुनों, लताओं और लक्ष्मण के प्रति सीता के वात्सल्य दृष्टा[35] वनवासी ऋषियों की स्त्रियों द्वारा सीता को कठिन विन्ध्य प्रदेश में पद यात्रा मार्गदर्शन प्रत्यक्ष दृष्टा[36] कठोर वृक्षों की रगड़वाली वन्य भूमियों में प्रकृति सुकुमारी सीता की यात्रा विषयक दृष्टा[37] राम–लक्ष्मण एवं सीता के विन्ध्य वर्पत पार करना दृष्टा[38] सीता के स्थान–स्थान पर निवास की इच्छा व झरनों का जल सेवन और कन्दराओं से भयभीत हो आँखे मूँदने का वर्णनकर्त्ता[39] प्यासी सीता के मूर्च्छित होने पर लक्ष्मण के झरने का जल लाने के वर्णन कर्त्ता[40] वृक्षों के पत्तो से शरूया तैयार करना व जम्बू के कुंज में दशरथ तनयों के कुटी निर्माण के दृष्टा[41] दशरथ पुत्रों के चन्द्रमा के की चन्द्रिका सदृश शीतल नर्मदा नदी पहुँचने के दृष्टा[42] छायेव सहयात्रा हेतु आग्रह कर्त्ता[43] अश्रुपूरित रामभद्र के विनम्र प्रणाम दृष्टा[44] सीता के रेवा में मध्याह्न विश्राम, बालक्रीडा एवं नदी पार करते दृष्टा[45] रेवा के इस पार रह उस पार गये राम–लक्ष्मण–सीता को अपलक निहारते[46] अश्रु युक्त नेत्रों से सुमन्त्र को देखते हुए राम–लक्ष्मण–सीता का नर्मदा के उस पार लोपा मुद्रा स्वामी अगस्त्य श्रषि आश्रम की ओर बढ़ने के दृष्टा[47] समाप्त वार्ता से अधिक मोहन कर्त्ता[48] अस्त्र ग्रहण की सूचना दृष्टा[49] आदि रूपों में अतिविशिष्ट व राज्ञोचित महनीय कर्मकर्तार के रूप में बालरामायण में समादृत है।

निष्कर्ष

'संस्कृत नाट्य साहित्य' समग्र साहित्य में अद्वितीय हैं। अपनी दृश्य–श्रव्य समन्वित आभा से सहृदआह्लादकारी

रसज्ञ पाठकवृंद को अनायास ही स्व की ओर आकर्षित करता हैं। संस्कृत रूपकों के विविध विषय वर्णन रहे हैं जिनमें 'अमात्य' सर्वथा प्राचीन व राजा के उत्कर्ष के हेतु के रूप में हमारे सामने प्रकट होता है। अमात्य ही वह सृष्टा है जिसके मस्तिष्क में राजा (स्वामी) व राज्य का प्रलय व अन्त पलता है। 'अमात्य' वह अद्वितीय तत्व है जो सदैव स्वामी के उत्कर्ष हेतु कृत संकल्प रहता है। संस्कृत नाट्य साहित्य में वर्णित 'अमात्य' अद्यावधि पर्यंत शासकों (स्वामियों) के पथ प्रदर्शक की भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। राजशेखर प्रणीत बालरामायण में समादृत माल्यवान व सुमन्त्र अपनी प्रतिभा, राज्योचित गुणों, स्वामिभक्ति, छायैव सेवाभाव, कुशल नीति–निर्माता, अस्त्र–शस्त्र आदि के कौशल से समन्वित हो प्रतिपल राजा (स्वामी) के हितचिंतन हेतु प्रयत्नशील रहते हैं।

राक्षस पात्र के रूप में अमात्य के पद पर माल्यवान का उल्लेख प्राप्य हैं जिसका चरित्र नाट्यकार ने प्रबुद्ध राजनीतिज्ञ के रूप में वर्णित किया है, जो भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल की घटनाओं पर अपनी सूक्ष्म दृष्टि रखते हैं। छल द्वारा राम का वन में निर्वासन यन्त्र–जानकी का निर्माण आदि माल्यवान की सूक्ष्मातिसूक्ष्म दृष्टिकोण के साथ –साथ माल्यवान की अपने स्वामी (रावण) के प्रति दृढ़ स्वामी–भक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठता, निर्भिक, यन्त्र–तन्त्र के विशेषज्ञ, कुशल राजनीतिज्ञ एवं भविष्य दृष्टा के रूप में वर्णन प्राप्य है।

'सुमन्त्र' स्वामिभक्ति में अद्वितीय हैं। राजशेखर ने सुमन्त्र के माध्यम से जन जन में स्वामी के प्रति अगाध आस्था व स्नेह धारण करने की प्रेरणा दी हैं। राम–लक्ष्मण–सीता वन गमन में सहगामी बन पथप्रदर्शन तथा अनन्तर प्रतिपल सूक्ष्मातिसूक्ष्म सूचना द्वारा राम–सीता–लक्ष्मण का ध्यान रखना। उनके विषयक सूचना से माता कौशल्या, महाराज दशरथ को सांत्वना प्रदान करना आदि समस्त गुण उन्हें आदर्श महामात्य के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में भी सुमन्त्र के व्यक्तित्व व श्रेष्ठ चारित्रिक गुणों से प्रेरणा लेकर स्वामी का उत्कर्ष, हितचिन्तन सम्भव कर राज्य का कल्याण किया जा सकता हैं। अतः इस हेतु राजनायकों, मंत्रियों को इस हेतु सकारात्मक दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए।

अतः उपर्युक्त दोनों अमात्यों के समस्त गुण कर्मो के विवेचन से ज्ञात होता है कि माल्यवान एवं सुमन्त्र दोनों स्वयं को अपने स्वामी के आत्मवान्, अविकारी, चतुर, दृढ़ निश्चयवान् के साथ–साथ अपने कर्त्तव्यों के प्रति पूर्णतः निष्ठावान, सच्चे सेवक, प्रजा कल्याण सज्ज एवं रक्षा को आतुर, धर्म, नीति, बुद्धि, युद्ध आदि समस्त क्षेत्रों एवं चारित्रिक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अमात्य के रूप में व्याख्यायित हैं।

सन्दर्भ सूची

1. 24 / प्रतिज्ञापौलस्त्यनानप्रथमोऽङ्कः – शमध्यायामाम्यां प्रतिविहिततन्त्रस्य नृपतेः परं प्रत्यावापः फलति कृतसेकस्तरूरिव।

   बहुव्याजं राज्यं न सुकरमराज्यप्रणधिभि–र्दुराराधा लक्ष्मीरनववहितचित्तं चलयति।।

2. 25 / प्रतिज्ञापौलस्त्यनानप्रथमोऽङ्कः – (विमृश्य) अहह। अनमात्यायत सिद्धेर्धिङ्मन्त्रित्वम्। कुतः।

   स्वेच्छाया कुरूते स्वामी यत्किंचन यतस्ततः।
   ततत् प्रतिचिकीर्षन्तो दुःखं जीवन्ति मन्त्रिणः।।

3. 25 / 1 के बाद का संवाद – राक्षसः (विचिन्त्य) – तद्भवद्भविष्यदनर्थयोर्भवदनर्थ प्रथमं प्रतिकुर्वीतेति नीतिविदः।

4. 3 / उन्मतदशाननो नाम प०चमोऽङ्कः – सुखिनः परसौख्येन परदुःखेन दुःखिता,
   जायन्ते कवयः काव्ये नयतन्त्रे च मन्त्रिणः।।

5. 3 / उन्मतदशाननो नाम प०चमोऽङ्कः – के पूर्व का संवाद
   मायामयः – भवतु तदिदमसमञ्जसं चेष्टितं देवस्य न यज्ञानवते माल्यवते निवेदयामि स खल्वस्माकं मतिनौविपल्वे कर्णधारः।.....

6. 4 / उन्मतदशाननो नाम प०चमोऽङ्कः – मतिमन्तं माल्यवन्तं।

7. 5 / उन्मतदशाननो नाम प०चमोऽङ्कः – के आगे का संवाद

माल्यवान् – किमिव ?

मायामयः – यदादिष्टोऽस्मि।

8. 5/5 उन्मतदशाननो नाम प०चमोऽङ्कः – के आगे का संवाद

माल्यवान् – (हसित्वा) –बुद्धबुद्धिर्हि प्रथमं पश्यति चरमं कार्यदुर्योगोऽवतरति यन्मया धूर्जटिधन.....

9. 6/5 उन्मतदशाननो नाम प०चमोऽङ्कः – के आगे का संवाद

माल्यवान् – ततश्च मया मन्दोदरीपितुर्मायागुरोर्मयस्य प्रथम शिष्यो विशारद नामा यन्त्रकार सबहुमानं नियुक्तः.....।

सूत्रधारचलद्दारूत्रेयं यन्त्रजानकी।

वक्त्रस्थसारिकालापा लङ्केन्द्रं क०चयिष्यति।।6। व 7।।

10. 8/5 – से पूर्व का संवाद – माल्यवान् – शृगु यत्कृतं भवति। सीताप्रतिकृतिदर्शनेन दशाननः प्रलोभितो भवति।.....

11. 8/5 – से पूर्व का संवाद – माल्यवान् – तद् गच्छ त्वं यथाभिमतसिद्धये। अहमपि मन्त्रिमण्डपिकामध्यससिष्ये।

12. 2/ अतः परं निर्दोषदशरथो भविष्यति अथ षष्ठोऽङ्कः

मायामयः – नैर्ऋताधिपकार्याणामुपायोपायकर्मणि।

आर्यो यनमाल्यवानास्तेऽव्यस्तलक्षेण चक्षुषा।।2।।

13. 4/6 के बाद का संवाद – माल्यवान् – अथ तत्र किं कृतम्।

मायामयः – यथादिष्टमार्येण।

माल्यवान् – (सहर्षं) तद्विस्तारतः कथ्यताम्।

14. 6/6 से पूर्व का संवाद – मायामयः – ततश्च यावन् मायाकैकेयी शूपर्णखा मायादशरथो मायामयश्च.....

15. 6,7/6 – मायामयः – इदम्

यत्त्वयाऽस्या महाराज प्रतिपन्नं वरद्वयम्।

व्योमयात्रासहचरों कैकेयी याचतेऽद्य तत्।।6।।

यथाभिहितं कि तत्। उक्तं च मन्त्ररथा।

वरेणैकेन लभतां रघुराज्यं सुतोनाम्।

चतुर्दश समा समो वने वन्येन तिष्ठतु।।

शूपर्णखा – श्रुतसत्यदशरथे नापि मायामयेन तथा करूणं.....।

16. 10/6 से पूर्व का संवाद – माल्यवान् – किं हि दुष्करं स्वामिभक्ते किमसाध्यं वेदग्धयस्य ततस्ततः।

17. 9/6 – मायामयः – आर्य ! किमपि द्विषतामुदात्तजनचरितमावर्जकं पश्य।

क्रूरक्रमं किमपि राक्षसजातिरेका तत्रापि कार्यपरतेति मयि प्रकर्षः।

रामेण तु प्रवसता पितुराज्ञयैव वाष्पाम्भसामहमपीह कुतो रसज्ञः।।9।।

18. 13/6 से पूर्व का संवाद

दशरथः – आह्वय सुमन्त्रवामदेवौ। (प्रविश्य)

वामदेवः – स्वस्ति महाराजदशरथाय। देव ! सन्निहितोऽत्र सुमन्त्रः।

19. 33/निर्दोषदशरथो नाम षष्ठोऽङ्कः –

वामदेव – निवेश्य पितृरहितराज्यरक्षणक्षणे शत्रुघ्नं स्वशपथैः.....।

20. 33/निर्दोषदशरथो नाम षष्ठोऽङ्कः – से आगे का संवाद

सुमन्त्र – आर्यावर्तमतिक्रम्य दक्षिणां दिशं प्रवसता कुमाररामभद्रेण निर्वति–तोऽस्मि। द्राघीयसीं च तीर्थयात्रां कृ

त्वा पुनरयोध्या.....

21. वहीं – (उपसृत्य) स्वस्ति महाराजदशरथाय। देव ! सुमन्त्रसंचारिताक्षरो दुस्तरकान्तारपथिको रामभद्रोंऽभिवादयते।

22. वहीं – राज्ञ्यः – अवि कुसलं तस्स सकलतस्य रामभद्दस्स लक्खणस्स
सुमन्त्रः – कथं न नाम कुशलं येषां चरितानि जनानामाशिषो भवन्ति।
दशरथः – सखे सुमन्त्र ! निवेदय वैदेशिकत्वं गर्भरूपाणाम्।

23. वहीं – 34 के बाद का संवाद
सुमन्त्रः – देव ! रघुराजधानीत इदं निवेद्यते।
सद्यः पुरीपरिसरेऽपि शिरीषमृद्वी गत्वा.....।

24. वहीं – 35 व बाद का संवाद – रूढोपलस्तृतवतीषु वसुन्धरासु दाक्षिण्यतः प्रचलितावमवलौय सीताम्।
रामाशयेऽपि परिपन्थिनि यत्तदुक्त्या सौमित्रिणाऽर्द्धपथ एव कृतो निवासः।। व 36 व साथ का संवाद

25. 38/ निर्दोषदशरथो नाम षष्ठोऽङ्कः – राज्ञ्यः– कथं या साऽस्माकं पुराणश्वशुरस्य भगवतो भगीरथरस्य...।

26. 38/6 – के बाद का संवाद – राज्ञ्यः – अहो सुस्थाने स्थितास्ते जनाः। ततस्ततः।
सुमन्त्रः – ततश्च पश्चिमेन प्रयागं.....

27. वहीं – दशरथः – दावि दक्षिणकोशलाधिपतिपुत्रि! सुकुमारा.....
आर्द्रोपलाक्लृप्तनवोटजनां सौमित्रिणा नीतफलोदकानाम्।
कथाप्रसङ्गस्मृतबान्ध्वानां तेषामभूतत्र चिरं प्रवासः।।39।।

28. वहीं 40/6 – व्क्तारवो निवसनं मृगचर्म शय्या गेहं गुहा विपुलपत्रपुटा घनाश्च।
मूलं दलं च कुसुमं च फलं च भोज्यं पुत्रस्य जातमटवोगृहमेधिनस्ते।।

29. वहीं 40/6 – के बाद का संवाद – कौशल्या – आर्य । कथयं कीदृशं पुण्यं वनवासिन्याः सीताया गृहिणीत्वम्।
सुमन्त्रः – इदं निवेद्यते।
यदास्वाद्यं सीता वितरति तदग्रे स्वगृहिणे सुमित्रापुत्राय प्रणिहितमशेषं च तदनु।
यदामं वा नामं यदनतिरसं यच्च विरसं फलं वा मूलं वा रचयति तु तेन स्वमशनम्।।41/6।।

30. वहीं – कौशल्याः – पुत्रि सीते! कुत्र पुनर्महाराजराजजातया भूत्वा.....।

31. वहीं – सुमन्त्रः – इंदमपरमावेद्यते ह्रदयकरीषं वचो.....।
उत्थाय संभ्रमबशस्खलितोतरीया कृत्वा धनुर्निचुलुके मृगयानिवृत्तौ।
सीताऽञ्चलेन तरलेन समुल्लसन्ती शमाननान्नमितपक्ष्मरजः प्रभार्ष्टि।।42/6।।

32. वहीं – सुमन्त्रः – ततश्च जानकी हरणकृतोधमदिराधविध्वंसनेन.....

33. वहीं 43/6 – दशरथः – अयि सुमन्त्र! नववधूटीलक्ष्मणयोः प्रथमपथिकता विक्लयति।
सुमन्त्रः – किं नाम विक्लवयति न पुनरानन्दयति।
धरणितलनिषण्णं वत्सविश्रान्तिहेतोर्व्यजति जनकपुत्री वाससः पल्लवेन।
अगरिगतनिजखेदः पादसंवाहनाभिः परिचरति च ह्रदयं लक्ष्मणो रामभद्रम।।

34. वहीं – राज्ञ्यः – हा देव ! क्व पुनर्गर्भेश्वराभ्यां भूत्वा जानकीलक्ष्मणाभ्यां पथिकजनयोग्यं गुरूशुश्रूषणं शिक्षितम्।
सुमित्रा – उचितकारित्वेऽश्रुतशिक्षितानि महाभागजनचरित्राणि।।

35. 44/6 – सुमन्त्रः – ताराप्रेङ्खणपीतवाष्पपयसो यत्नेन संचारिताः सीतायाः सविध्स्थितेषु च मृगद्वन्द्वेषु वीरूत्सु च।

बाले वर्त्मकृते प्रवासिनि जवादुल्लङ्घय गम्भीरतां सौमित्रौ निपतन्ति वत्सलताया पुत्रस्य ते दृष्टयः।।44।।

36. वहीं 45/6 व 46/6 – सुमन्त्रः – देव रामचनद्रदर्शनमेव सर्वेषामपि.....

वप्रे यूथं चरति करिणां कन्दरास्वच्छभल्लाः कु०जे सिंहैः स्थितिरूपहिता द्वीपिभिर्मेखलासु।
गोलाङ्गूलास्तरूषु सरणौ भ्रान्तिमन्तः पुलिन्दैर्विन्ध्ये सत्वं तदिह कतरद् यन्न हिसत्रं न रौद्रम्।।45।।

अपि च । सीरध्वजसुरासिनि!

ग्रावग्रन्थिं परिहर पुरः कण्टकिन्यत्र वीरूद्वस्त्रप्रान्तं दवदहनतः किञ्चिदुच्चौः कुरूस्व।
शाखास्तिर्यग्विनमय शिरः पश्य वल्मीकरन्ध्रं वंशस्तम्बे चरति च करी तत्स्थिरा तावदास्स्व।।46।।

37. वहीं – सुमित्रा – अहह ! कथं नु खलु कर्करोत्केरवल्लकल.....

सुमन्त्रः – मुञ्चत्यग्रे किसलयचयं लक्ष्मणो याति सीतां पादाम्भोजे विसृजदसृजो तत्र संचारयन्ती।
रामोमार्ग दिशति च ततस्तेऽखिलेनाऽपि चाह्ना शैलोत्सङ्गप्रणयिनि पथि क्रोश्मेकं वहन्ति।।47।।

38. 48/6 – जरवदजगरश्वासत्रास प्रनष्टमृगाङ्गनं हरिनखमुखन्यासादस्तद्विपोज्भित्त चीत्कृतम्।
शबरवनितोत्खातः कन्दैः स्फुटस्थपुटान्तरं तदनु सरितां बन्धुं विन्ध्यं गतास्त इमे गिरिम्।।48।।

39. 49/6 – मूले मूले पथि विटपिनां खेदिनी दीर्घमास्ते शुष्यत्कण्ठी पिबति सलिलं निर्झरे निर्झरे च।
जातत्रासा निमिषति दृशं कन्दरे कन्दरे च स्थाने स्थाने वहति च मतिं बद्धवासाभिलाषा।।

40. 50/6 – विन्धयाध्वानो विरलसलिलास्तर्षिणी तत्र सीता यावन्मूर्छा कलयति किल व्याकुले रामभद्रे।
द्राक्सेमित्रिः पुटककलर्शी मालुधानीढलानां तावत्प्राप्तो दधदतिभृतीं वारिणां नैर्करेण।।50।।

41. 51/6 – विहितशयनोऽनेकन्यासैरनोकहपल्लवैः कलितकलशीपाणिः कुम्भीदलैश्च पुटीकृतैः।
अथ विरचितः किंचितालप्रभेद्धि सुतेन ते परिसरसरिज्जम्बू कुञ्जे निकेतपरिग्रहः।।

42. 52/6 – गिरिषु जयपताका विन्ध्यशैलस्य पाणिर्द्विपकुलनिचिताम्भाः प्रेयसी पश्चिमाब्धेः।
नयनपथमथगान्नर्मदा देव तेषां शिशिरितजलमिन्दोश्चन्द्रिकेव प्रसूता।।

43. 52/6 के बाद का संवाद

सुमन्त्रः – ततश्चाहमनुगमनकृताग्रहग्रन्थिरपि.....

44. 53/6 – कृत्वा पाणी शिरसि जटिले पद्मकोशायमानौ रामेण प्राक्प्रणतिविनयो देव विज्ञापितस्ते।
बाष्पस्तारातरलनयनस्तम्भितोप्युज्जिहानः पश्चान् मुक्तः श्वसितविधुतो वन्दितेनाननेन।।

45. 54/6 – नीत्वा कालं तरूणतरणिं स्निग्धजम्बूनिकु०जे धारादत्तोन्नमितसिकतासद्मनां क्रीडनेन।
रेवां देव स्खलितचरणा पिच्छिलाभिः शिलाभिःस्तामुत्तीर्णा पथिकतरलन्यस्तहाहा वधूस्ते।।

46. वहीं – सुमन्त्रः – ततोऽहं तानवालोकयन्नर्वाक्कूल एव तां.....

47. 55/6 – जित्वा वाष्पं किमपि कलया स्फारितैर्नेत्रपात्रै–रर्वाक्कूले विहितवसतिं वीक्षमाणाः क्षणं माम्।
ते दिग्भागं स्तिमितवचसो नर्मदायाः परस्ताल्लोपामुद्रापतितिलकितं देव गन्तुं प्रवृत्ताः।।

48. वहीं – सुमन्त्रः – देवि ! अतिक्रान्तवर्णनायामलमलमतिसंमोहेन।

49. वहीं – देव ! तदिदमपक्रान्तोपवर्णनं कोयमायुधग्रहणकालः।

––==00==––